तमाशबीन वर्तमान

राकेश कुमार वर्मा

कपकपाती सौंदर्य को देखने,
हुजूम उलटते हैं।
डरते हैं, कठराते हैं, साहिब.... फिर भी,
कदम न रुकते हैं।
होटेल पे लिए नन्ही सी हैंगी,
वो नव कोपल भी साथ आती हैं।
पापा के कंधों पे बैठ,
नन्ही कल्प हर्षाती हैं।
भविष्य को उठाये कंधो पे,
देखो आज खड़ा हैं।
उसको अपनी ख्याति पे,
नाज बड़ा हैं।
मन में लिए ये सोच बिजली पलटती हैं।
अनायास ही खुशी की लहर,
कोलाहल में बदलती हैं।
वर्तमान भागता हैं उलटे पैर,
भविष्य रोता हैं।
जब बिन सोचे बने तमाशबीन.
तब यही तो होता है।
तब यही तो होता है।।।